आखिरी शिकार

संतोष पाठक

Sample Copy. Not For Distribution.

आखिरी शिकार

Sample Copy. Not For Distribution.

Publishing-in-support-of,

EDUCREATION PUBLISHING

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.educreation.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-1-61813-835-4

Price: ₹ 320.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Educreation.

Printed in India

Sample Copy. Not For Distribution.

आखिरी शिकार

संतोष पाठक

EDUCREATION PUBLISHING
(Since 2011)
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

समर्पण

उस महजबीं को समर्पित, जो बसंती बयार बनकर आई और सूनामी की तरह सबकुछ तहस–नहस कर के वापिस लौट गयी।

Sample Copy. Not For Distribution.

उपन्यास के सभी पात्र, स्थान एवं घटनाएं काल्पनिक हैं। किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति, समुदाय अथवा स्थान से उनकी समानता संयोग मात्र होगी। उपन्यास में निहित तथ्यों का प्रयोग कहानी को रोचक बनाने के लिए किया गया है, उनका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र दिल्ली ही रहेगा।

Sample Copy. Not For Distribution.

लेखक परिचय

लेखक संतोष पाठक का जन्म 19 जुलाई 1978 को, उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के बेटाबर खूर्द गांव में एक ब्राहम्ण परिवार में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा गांव से पूरी करने के बाद वर्ष 1987 में आप अपने पिता श्री ओमप्रकाश पाठक और माता श्रीमति उर्मिला पाठक के साथ दिल्ली चले गये। जहां से आपने उच्च शिक्षा हासिल की। आपकी पहली रचना वर्ष 1998 में मशहूर हिन्दी अखबार नवभारत टाईम्स में प्रकाशित हुई, जिसके बाद आपने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। वर्ष 2004 में आपको हिन्दी अकादमी द्वारा उत्कृष्ट लेखन के लिए पुरस्कृत किया गया। आपने सच्चे किस्से, सस्पेंस कहानियां, मनोरम कहानियां इत्यादि पत्रिकाओं तथा शैक्षिक किताबों का सालों तक सम्पादन किया है। आपने हिन्दी अखबारों के लिए न्यूज रिपोर्टिंग करने के अलावा सैकड़ों की तादात में सत्यकथाएं तथा फिक्सन लिखे हैं।

Sample Copy. Not For Distribution.

लेखक की कलम से

मेरी नवीनतम रचना आपके हाथों में है। जिसके जरिए एक बार फिर आपसे रूबरू होने का फक्र मुझे हासिल हो रहा है। 'आखिरी शिकार' भी मेरे पिछले उपन्यास 'अनदेखा खतरा' की तरह सस्पेंस थ्रिलर है! जिसे मैंने बड़े ही मनोयोग से आपके लिए तैयार किया है। हमेशा की तरह इस बार भी मैं कथानक में रोमांस और कॉमेडी का तड़का लगाना नहीं भूला हूं, लिहाजा स्वाद बरकरार रहेगा। अलबत्ता पहले से ज्यादा स्पाईसी बन पड़ा है या नहीं इसका फैसला तो आप ही करेंगे।

'आखिरी शिकार' में एक बार फिर आपकी मुलाकात 'खबरदार' के चीफ रिपोर्टर आशीष कुमार गौतम से होगी, जो यकीनन आपको इंवेस्टीगेशन की एक नई दुनिया से रूबरू करायेगा। लिहाजा हमेशा की तरह इस बार भी उपन्यास का हीरो आशीष ही होगा, इसमें कोई दो राय हो ही नहीं सकती। उपन्यास की नायिका की बात करें तो उसे लेकर मैं थोड़ा उलझन में हूं! लिहाजा इस बाबत कोई फैसला मैं आप पर ही छोड़ता हूं। उपन्यास पढ़ने के बाद आप ही फैसला करें कि सही मायने में 'आखिरी शिकार' की हीरोइन का खिताब किसे मिलना चाहिए।

मुझे खेद है कि मेरा पूर्व प्रकाशित उपन्यास 'अनदेखा खतरा' अपने तयशुदा वक्त में प्रकाशित नहीं हो सका था। इसलिए आपके हाथों तक विलम्ब से पहुंचा और बहुत से पाठकों तक शायद अभी पहुंच भी नहीं पाया है। अलबत्ता जिसने भी उपन्यास पढ़ा, उन्हें बेहद वाह! वाह! लगा।

कुछ पाठकों ने शिकायत दर्ज कराई है कि 'अनदेखा खतरा' में अपराधी एकदम चमत्कृत रूप से सामने आता है, जबकि पूरे उपन्यास में उसका जिक्र बहुत ही कम किया गया है। जनाब मैं आपकी बात से पूरी तरह सहमत हूं, मगर क्योंकि मैं तहेदिल से आपको चौंकाना चाहता हूं इसलिए ऐसी हरकतें ना चाहते हुए भी करनी पड़ती हैं।

कुछ लोगों ने 'विक्रांत' और ''शीला' जैसे ओल्ड फैशन के नामों पर भी ऐतराज जताया है। लखनऊ के एक पाठक सदाशिव पांडे

Sample Copy. Not For Distribution.

जी ने अपने मेल में लिखा है कि – ''मैंने अनदेखा खतरा पढ़ा, पढ़कर बेशक मजा आ गया। पूरी कहानी मैंने एक ही बैठक में पढ़ डाली। खासतौर से उपन्यास का क्लाईमैक्स तो कमाल का था। मगर हैरानी होती है ये जानकर कि इतने मॉर्डन किरदारों का नाम चुनने में आपने कोई दानिशमंदी नहीं दिखाई। भला विक्रांत और शीला जैसे नाम भी कोई रखता है आजकल!''

इसी सिलसिले में बिहार के रंजीत राय साहब की मेल देखिए– 'कमाल का सस्पेंस था, कमाल की कहानी थी। लग रहा था जैसे आंखों के सामने ही सबकुछ घटित हो रहा हो। खासतौर से कातिल के बारे में जानकर तो मैं उछल ही पड़ा। विक्रांत और शीला दोनों का किरदार बहुत अच्छा था। कई बार हंसा कर लोट–पोट भी कर दिया। लेकिन शीला के नाम के साथ आपने न्याय नहीं किया, यकीन जानिए अगर आप उसके हत्थे चढ़ गये तो बेशक वो आपको गोली मार देगी।'

बहरहाल विक्रांत गोखले और शीला के नाम से भले ही लोगों को ऐतराज हुआ हो मगर उनके किरदार से किसी भी पाठक ने नाउम्मीदी जाहिर नहीं की। सभी को उन दोनों का किरदार और उपन्यास का कथानक बहुत–बहुत पसंद आया, जिसकी की मुझे बेहद खुशी है।

आप सभी की हौसला–अफजाई के लिए मैं तहेदिल से शुक्रगुजार हूं।

हमेशा की तरह प्रस्तुत रचना के प्रति आपकी अमूल्य राय के इंतजार में–

आपका शुभाकांक्षी

संतोष पाठक

सम्पर्क:

Email : skpathaknovel@gmail.com

Website : www.santoshpathak.in

दिनांक 24:04:2017

Sample Copy. Not For Distribution.

आखिरी शिकार

सरोजनी नगर इलाके में दाखिल होकर आशीष 'स्वागत' रेस्टोरेंट पहुंचा। एस.एन. मार्केट के पिछले हिस्से में स्थित 'स्वागत' रेस्टोरेंट बेहद तड़क–भड़क वाला अत्याधुनिक रेस्टोरेंट था जिसके एक पोर्शन में डिस्कोथेक भी था। वैसे तो 'स्वागत' कदरन नई जगह थी किंतु डिस्कोथेक की वजह से वो जल्दी ही युवा वर्ग की पहली पसंद बन गया था। शाम घिरते ही नौजवान लड़के–लड़कियों का वहां जमावड़ा लग जाता था और नौ बजते–बजते भीड़ का आलम ये हो जाता था कि डिस्कोथेक की एंट्री बंद करनी पड़ जाती थी। खासतौर से वीकेंड पर तो नौ बजे के बाद डिस्को में एंट्री पाना और कार में बैठकर मंगल ग्रह पर जाने की सोचना एक ही बात साबित होनी थी।

पार्किंग में मोटरसाइकिल खड़ी करने के बाद आशीष अपनी कलाई घड़ी पर दृष्टिपात करता हुआ रेस्टोरेंट में दाखिल हुआ। दस बजने को थे, वो निर्धारित वक्त से एक घंटा लेट वहां पहुंचा था।

डाइनिंग हॉल इस वक्त खचाखच भरा हुआ था। कहीं कोई टेबल खाली नहीं थी। वहां पहुँचकर इधर–उधर फिसलती उसकी निगाह दाईं ओर की आखिरी टेबल पर गई तो नीलेश तिवारी को वहां मौजूद पाकर उसने चैन की सांस ली। उस वक्त वहां कुल जमा आठ लोग मौजूद थे, जो दावत उड़ाने में इस कदर व्यस्त थे कि उन्होंने नये मेहमान पर ध्यान देने की कोशिश तक नहीं की।

वो एक छोटी सी डिनर पार्टी थी जिसमें आशीष बतौर गेस्ट इनवाइट था। पार्टी का मेजबान नीलेश तिवारी था जिसका कि आज जन्मदिन था। नीलेश तिवारी को वो एक अरसे से जानता था मगर जिगरी–यार जैसी कोई बात उन दोनों के बीच में अभी तक नहीं बन पाई थी।

आशीष को आया देख नीलेश फौरन उठ खड़ा हुआ और यूं बगलगीर होकर मिला जैसे सदियों के बिछुड़े हुए दो भाई अचानक आमने–सामने आ गये हों। ये जुदा बात थी कि उनकी आखिरी मुलाकात अभी दो दिन पहले ही होकर हटी थी।

Sample Copy. Not For Distribution.

नीलेश तिवारी सताइस–अठाइस साल का पतला–दुबला नौजवान था, जो आज के जमाने में भी नब्बे के दशक जैसे फैशन करता था। अपनी चाल–ढाल एवं पहनावे से वो बेहद लापरवाह किंतु शक्लो–सूरत से निहायत भोला–भाला युवक दिखाई देता था। इस वक्त वो बादामी कलर का सूट और उससे मैच करती टाई लगाये था। ये दोनों चीजें सालों पुरानी थीं और अपनी चमक–दमक पूरी तरह खो चुकीं थीं, जिसका कोई एहसास नीलेश को होता हो ऐसा कम से कम उसकी सूरत से तो नहीं लगता था। अब तो उसके इस खास परिधान से हर कोई वाकिफ हो चुका था। जिसे वो किसी भी खास मौके पर पहन लिया करता था। उसके फटेहाल होने की पोल खोलने वाली एक और चीज थी – उसके जूते, जिनके तले बुरी तरह घिसे हुए थे। बेध्यानी में कभी वो पैर ऊपर उठाता तो तलों में बने छेद दूर से ही नजर आ जाते थे।

आशीष यह सोचकर हैरान था कि नीलेश जैसे 'जेब से फकीर' शख्स ने जन्मदिन की पार्टी के लिए 'स्वागत' जैसे एक्सपेंसिव रेस्टोरेंट को चुना था।

"जन्मदिन मुबारक हो लेखक साहब।"

"शुक्रिया" – आशीष के मुंह से अपने लिए 'लेखक साहब' का संबोधन सुनकर जैसे उसपर कोई नशा सा सवार हो गया हो, वो तरन्नुम में बोला – ''तुम्हारी राह तकी थी हमने, आमद की आहट भी सुनी थी हमने। शमा–ए–महफिल रोशन होगी जरूर, इसी उम्मीद में, कुछ जिन्दगी और जी ली थी हमने।"

''वाह! क्या बात है, मजा आ गया।''

कहकर आशीष तनिक हँसा, फिर वहाँ मौजूद बाकी मेहमानों को – जिनमें से एक को भी वो नहीं जानता था – हाय–हैलो करके एक कुर्सी पर विराजमान हुआ।

बैठे–बैठे उसने एक बार फिर नीलेश का नये सिरे से मुआयना किया। कोई नई बात नजर नहीं आई, सिवाय इसके कि आज वो हमेशा की तरह कोई टूटा हुआ, जिन्दगी से हारा हुआ, इंसान नहीं लग रहा था। बल्कि उसके चेहरे पर रौनक थी, एक अजीब सा सकून था जो आज से पहले कभी नीलेश तिवारी के चेहरे पर नहीं दिखाई दिया था।

नीलेश से उसकी दोस्ती कब और कैसे हो गई, ये बात आज भी उसके समझ से परे थी। अलबत्ता वो जब भी नीलेश तिवारी से मिलता उसे यूं महसूस होता जैसे वो पहली बार उससे मिल रहा हो। उसने कई बार नीलेश की जिन्दगी के 'डार्क–कार्नर' में सेंध लगाने की कोशिश की थी मगर अभी तक नाकामयाब ही रहा था।

Sample Copy. Not For Distribution.

अलबत्ता ऐसी हर कोशिश में उसे महसूस होता था कि नीलेश तिवारी के व्यक्तित्व में कोई खास बात जरूर थी जो लोग सहज ही उसकी ओर खिंचे चले आते थे। ये जुदा बात थी कि प्रत्यक्षतः उसे नीलेश में कुछ भी स्पेशल नहीं दिखाई देता था।

आशीष और नीलेश में समानता की बात करें तो दोनों में महज एक बात कॉमन थी, जहाँ आशीष 'खबरदार' जैसे प्रतीष्ठित अखबार का चीफ रिपोर्टर था। वहीं नीलेश तिवारी भी एक साँध्य दैनिक अखबार में फ्री लाउंस रिपोर्टिंग करता था। यानी उसकी हालत बेरोजगारों से तनिक ही बेहतर थी। इसके अलावा नीलेश को कहानियाँ, विशेषकर उपन्यास लिखने का बेहद शौक था। उसके सम्पर्क में आने वाला हर व्यक्ति जानता था कि वो लेखन की दुनिया में छा जाने का तमन्नाई था। बावजूद इसके अभी तक पूत के पांव पालने में ही थे।

उसकी कुल जमा बीस कहानियाँ ऐसी थीं जो कि विभिन्न अखबारों और पत्रिकाओं के जरिए प्रकाशित हो चुकी थीं। उपलब्धि की श्रेणी में उसके पास हिन्दी अकादमी द्वारा सर्वश्रेष्ठ कहानी लेखन के लिये दी गयी एक ट्रॉफी थी, जिसे वो हर आने–जाने वाले को दिखा चुका था। यहां तक कि अखबार और दूधवाला भी उसकी ट्रॉफी और उससे संबंधित कहानी से वाकिफ थे। इन छोटी–मोटी सफलताओं को अगर नजरअंदाज कर दें तो वो जिन्दगी से हारा हुआ एक ऐसा नाकामयाब शख्स था, जो अब महज सपनों की दुनियां में जीने का आदी हो चुका था।

यही क्या कम था कि वो अपनी नाकामयाबी को शराब की बोतल में घोलकर नहीं पीने लगा था, जो कि उसके जैसे जिंदगी से हारे हुए लोगों की पहली पसंद होती है।

"क्या सोचने लगे रिपोर्टर साहब?" नीलेश ने आशीष के आगे चुटकी बजाई।

"कुछ नहीं।" –वो तनकर बैठता हुआ बोला– "बस यूँ ही।"

"तुम्हारे लिए क्या मँगवाऊँ?"

"अभी नहीं जरा ठहरकर मंगाना।"

''ठहरने के लिए मैं कॉफी मंगवाये लेता हूं।''

आशीष ने ऐतराज नहीं किया। नीलेश ने एक वेटर को बुलाकर कॉफी का आर्डर दे दिया।

नीलेश तिवारी के बारे में आशीष की अपनी राय भी कोई बुरी नहीं थी। उसे यकीन था कि नीलेश एक दिन सचमुच लेखन की दुनिया में छा जायेगा। बस जरूरत थी एक सही ब्रेक मिलने की। जिसकी अभी दूर–दूर तक कोई उम्मीद दिखाई नहीं देती थी।

Sample Copy. Not For Distribution.

कॉफी आ गई। दोनों ने अपना–अपना कप उठा लिया।

"पार्टी किस खुशी में दे रहे हो?"

"तुम्हें कॉफी से नशा हो जाता है क्या?'' नीलेश ने सवाल के बदले सवाल कर दिया।

"मैंने ऐसा कब कहा।''

"फिर बहक क्यों रहे हो यार!" – नीलेश झुँझलाया सा बोला – "जन्मदिन की मुबारकबाद देने के बाद पूछ रहे हो पार्टी किस खुशी में दी। ये तो वही बात हुई जैसे किसी की शादी के बाद उससे पूछा जाय बता भाई सुहागरात किस खुशी में मना रहा है।''

"बकोमत, तुम्हारे जन्मदिन सेलिब्रेशन में मैं पिछले तीन सालों से शामिल होता आ रहा हूँ। जो कि तुम दो–चार लोगों के बीच किसी थर्ड–क्लास ढाबे में या तुम्हारे फ्लैट पर अरेंज करते थे, ना कि 'स्वागत' जैसे किसी एक्सपेंसिव जगह पर।"

"शक करना तो जैसे तुम्हारी आदत में शुमार हो गया है।''

"बात को हवा में मत उड़ाओ लेखक साहब, साफ–साफ बताओ असल माजरा क्या है?"

"तुम्हें क्या लगता है?"

"या तो तुम्हारा सट्टा लग गया है या फिर तुम्हारा दिमाग हिल गया है।"

"दूसरी बात कदरन ज्यादा सही है।" – नीलेश मुस्कराता हुआ बोला – ''समझ लो मेरा दिमाग हिल गया है।"

"यानी कि नहीं बताओगे।"

''तुम बात को यूं समझ लो कि आज मैं बहुत खुश हूँ, बल्कि खुशी से पागल हुआ जा रहा हूँ। यकीन जानो इन दिनों अगर मेरी माली हालत खस्ता नहीं होती तो आज की पार्टी किसी फाईव स्टार होटल में अरेंज करता और पूरे शहर को बुला भेजता।"

"सिर्फ इन दिनों खस्ता है तुम्हारी माली हालत!"

"मेरा मतलब है हमेशा कि तरह इन दिनों भी।"

आशीष हँस पड़ा।

''तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो।''

"अरे नहीं यार! मैं तो सिर्फ तुम्हें ख्वाबों की दुनिया से निकालकर हकीकत के धरातल पर लाना चाहता हूँ।" – वह नीलेश के हाथ पर हाथ रखता हुआ समझाने वाले अंदाज में बोला – "तुम लेखक–कवि–शायर टाइप लोगों की सबसे बड़ी ट्रेजडी यही होती है कि वक्त मिलते ही कल्पना के घोड़े की सवारी करना शुरू कर देते हो और फिर जहाँ न पहुँच जाओ वही कम है। किसी ने सच ही कहा है – लेखक और ठरकी कहीं भी जा सकते हैं।"

Sample Copy. Not For Distribution.

"ठरकी!"

"जिसका दिमाग हिला हुआ हो, जो सनकी हो।"

"तुम्हारा मतलब है मैं सनकी हूँ।"

"तुम बेहतर जानते हो।"

"देखो रिपोर्टर साहब!'' – वो तनिक आहत भाव से बोला – ''मैं जानता हूँ लोग मुझे निकम्मा और काहिल समझते हैं। मेरे पीठ पीछे मुझपर हंसते भी हों तो कोई बड़ी बात नहीं। अपने बाप की नजरों में भी मैं यही सब था, तभी तो आजिज आकर उसने मुझे घर से निकाल दिया था। मगर इत्मीनान रखो अब वो मुबारक घड़ी आ गयी है, जब लोग अपने कहे पर पछतायेंगे और तब पहली बार मैं जी खोलकर हँस सकूँगा। समझ लो मेरे माथे पर लगी बदकिस्मती की मुहर अब मिट चुकी है। मेरे खुदा को शायद रहम आ गया मुझपर और मेरी जिल्लत भरी जिंदगी दोनों पर! जल्दी ही तुम वो सबकुछ मुझे हासिल करते देखोगे जिसका कि मैं खुद को हकदार समझता हूं।"

कहकर जब वो खामोश हुआ तो उसकी आँखें छलक आईं थीं।

"सॉरी यार! मैं तुम्हारा दिल नहीं दुखाना चाहता था, मगर क्या करूं जुबान पर काबू नहीं रख पाता हूं।" – आशीष उस बद्मजा टॉपिक को बदलने की नीयत से बोला – "अब जरा अपने आज के मेहमानों के बारे में बताओ, कौन लोग हैं ये, खासतौर पर तीनों लड़कियों के बारे में मुझे बताओ। मैंने उन्हें पहले कभी नहीं देखा।"

जवाब में नीलेश ने एक बार वहाँ बैठी युवतियों पर गौर किया, फिर बोला, "सबसे कोने में जो कि मर्दाना टाइप की शर्ट पहनकर बैठी है, उसका नाम कल्पना लाल है। वह पहले कॉलेज में और अब कम्प्यूटर इंस्टीट्यूट में मेरे साथ है। कॉलेज के जमाने में भले ही उसे मेरी तरफ देखना गंवारा नहीं था, मगर अब हमारी अच्छी बनती है। दूसरी कटे हुए घुंघराले बालों वाली जो युवती कल्पना लाल के बगल में बैठी है, उसका नाम मोनिका जैन है, वो शादीशुदा है और उसका एक बच्चा भी है।''

''कमाल है!'' – आशीष हैरान निगाहों से मोनिका का जायजा लेता हुआ बोला – ''इसे देखकर लगता तो नहीं है कि ये शादी जैसा फुल टाइम जॉब करती होगी।''

''शी! धीरे बोलो यार!'' – नीलेश उसे टोकता हुआ बोला।

''हाउस वाईफ है?''

''नहीं जॉब करती है। कम्प्यूटर टीचर है, मुझे कम्प्यूटर की एबीसीडी इसी ने सिखाई थी।''

Sample Copy. Not For Distribution.

''और मोनिका के बगल में जो तीसरी मोहतरमा हैं, वो कौन हैं?''

''उसका नाम 'वर्षा' है, बिहार की रहने वाली है।"

''ये क्या करती है?''

''एक प्राईवेट स्कूल में अंग्रेजी पढ़ाती है, मुझे भी पढ़ा चुकी है।''

''स्कूल में?'' आशीष हैरानी से बोला।

''नहीं यार! पिछले साल मैं इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स कर रहा था, वहीं पर! स्कूल वाली जॉब तो इसने अभी तीन महीने पहले ही ज्वाइन की है।''

"कमाल है यार! तुम्हारी टीचर्स कुछ ज्यादा ही मेहरबान नहीं हैं तुम पर! जो यूं तुम्हारी पार्टी अटैंड करती फिरती हैं। मेरी समझ में नहीं आता तुम लड़कियों को यूं अपनी तरफ खींच कैसे लेते हो। तुम्हारी तो शक्ल भी किसी फिल्मी हीरो से नहीं मिलती। ऊपर से तुम्हें एक नजर देखकर ही पता चल जाता है कि जेब से कितने बड़े कड़के हो। इन दोनों क्वॉलीफिकेशंस के बिना लड़कियां तुमपर फिदा कैसे हो जाती हैं। कौन सा जादू आजमाते हो भाई तुम!"

''तुम गलत सोच रहे हो! इसमें फिदा होने जैसी कोई बात नहीं है, बस ये सब ट्रस्ट करती हैं मुझपर। मैंने विश्वास जीता है इनका और इनके जैसी बाकियों का भी। ये उसी विश्वास का जहूरा है कि वो मुझे किसी भी बात के लिए ना नहीं करतीं। बावजूद इसके कि वो मुझे अपना ब्वायफ्रैंड नहीं समझतीं और मैं उन्हें अपनी गर्लफ्रैंड नहीं समझता। मैं इन सबसे बहुत प्यार करता हूं, इज्जत करता हूं इनकी और उन सबकी जिन्हें कि मैं जानता हूँ और उनकी भी जिन्हें मैं नहीं जानता। फिर चाहे वो मर्द हो या औरत! मेरी मोहब्बत का हिस्सेदार है और मैं खुद को उनके प्यार का मेजर शेयर होल्डर समझता हूँ।"

"फिलॉसफी अच्छी झाड़ लेते हो, आखिर लेखक जो ठहरे।"

"यह कोई फिलॉसफी नहीं है! बल्कि मेरे जीवन की एक ऐसी सच्चाई है जिसको मेरे सिवाय कोई नहीं समझ सकता।" – नीलेश पुरजोर लहजे में बोला – ''कभी आजमा कर देखना, कभी किसी लड़की को इज्जत देकर देखना। उसे उसके वजूद की अहमियत समझाकर देखना। कभी उसका विश्वास हांसिल करके देखना। तुम पाओगे कि दुनिया की हर लड़की तुम्हारी तरफ आकर्षित है। तुम्हारी यह सोच कि लड़कियां सिर्फ खूबसूरत या पैसे वाले लड़कों की तरफ आकर्षित होती हैं – निहायत घटिया और पुरूषवादी मानसिकता को उजागर करने वाली है। – हकीकत तो ये है

Sample Copy. Not For Distribution.

रिपोर्टर साहब कि कोई भी लड़की सबसे पहले किसी सच्चे लड़के की तरफ आकर्षित होती है। एक ऐसे लड़के की तरफ जो उसे समझ सके, उसकी इज्जत कर सके, जिसपर वो आंख बंद करके ट्रस्ट कर सके। बाकी सभी तो मेल ट्रेन निकलने के बाद पैसेंजर ट्रेन की श्रेणी में आते हैं, मजबूरन सफर करना ही पड़ता है।''

आशीष भौंचक्का सा उसकी शक्ल देखता रह गया।

''क्या हुआ खबरीलाल मुझे ऐसे क्यों घूर रहे हो जैसे कि मेरे सिर पर सींघ निकल आए हों।''

''कुछ नहीं।'' – कहकर आशीष हौले से हंसा फिर बोला – ''वैसे तो मुझे पहले से ही उम्मीद थी कि तुम एक ना एक दिन लेखन की दुनिया के शाहरूख खान बनोगे! मगर आज तुम्हारी बातें सुनने के बाद मुझे सौ फीसदी यकीन हो गया कि तुम्हारा नाम भी दुनिया के महान लेखकों में गिना जायेगा।''

''वो वक्त भी आ ही गया समझो, अब लोगों को मेरे भीतर के लेखक से रूबरू होने का मौका मिलेगा। एक ऐसा लेखक जो जीवन की वास्तविकता को लोगों के सामने लायेगा, उन्हें प्यार–मोहब्बत की एक नई दुनियां से रूबरू करायेगा। तुम देखना लोग–बाग मेरी किताबें पढ़कर हैरान रह जायेंगे।"

"तुम फिर शुरू हो गये।" – आशीष खींझकर बोला – "तुम अगर यह सोच रहे हो कि, दो–चार सस्ती पत्रिकाओं में छपी तुम्हारी कहानियों को पढ़कर लोग–बाग तुम्हारी लेखनी के दीवाने हो जायेंगे, तो ऐसा सोचकर तुम महज खुद को तसल्ली देने की कोशिश कर रहे हो। मैं मानता हूँ तुम अच्छा लिखते हो, आगे और भी अच्छा लिखोगे। पर महज लिखने भर से किसी को महानता हासिल नहीं हो जाती। लेखन का सारा कारोबार पाठकों की पसंद पर निर्भर करता है। जब तक तुम्हारी लिखी किताबें लोगों तक नहीं पहुंचती, तुम्हारा लिखना ना लिखना सब बराबर है। तुमसे अच्छे तो वो लोग हैं, जो अपने मन की भड़ास फेसबुक और ट्विटर पर निकाल लेते हैं और कुछ लोग उसे पसंद–नापसंद करके अपने ख्याल जाहिर कर देते हैं। जबकि तुम्हे तो ये एडवांटेज भी हासिल नहीं है। हकीकत तो ये है कि तुम एक ऐसे लेखक हो जिसकी कभी कोई किताब नहीं छपी। एक ऐसे लेखक हो जो अपनी रचनायें खुद पढ़कर आनंदित होता रहता है। अब हलवाई अगर अपनी मिठाई खुद खाकर उसका गुणगान करता रहे और इस बात पर फूला ना समाये कि उसने कितनी स्वादिष्ट मिठाई बनाई है, तो इससे उसे प्रसिद्धि तो मिलने से रही। जरा सोचो उस मिठाई को

Sample Copy. Not For Distribution.

बनाने का फायदा ही क्या जिसका कोई खरीदार ना हो, जिसे चखकर कोई स्वाद तक बताने वाला ना हो।"

"तुमने शायद गौर नहीं किया रिपोर्टर साहब, मैं कब से कह रहा हूं कि वक्त बदल चुका है, मेरे बुरे दिनों पर फुल स्टॉप लग चुका है। क्योंकि कामयाबी के मुकाम की पहली सीढ़ी मैं चढ़ चुका हूं। तुम्हारी उम्मीदों से भी बड़ा ब्रेक मिला है मुझे लेखन की दुनिया में। बहुत जल्द तुम देखोगे कि पूरे हिन्दोस्तान के लोग मुझे बाई नेम जानेंगे और एक दिन तुम्हारे भाई–बंधु मेरा इंटरव्यू लेने के लिए अप्वाइंटमेंट मांगते फिरेंगे।"

"तुमने ड्रिंक किया है?"

''नहीं मैं शराब नहीं पीता और ये बात तुम अच्छी तरह से जानते हो।''

''फिर यूं बहकी–बहकी बातें क्यों कर रहे हो?''

''सोचो कोई तो वजह होगी।''

''खुद बता दो?''

"ठीक है" – कहते हुए नीलेश ने कुर्सी से सटाकर रखे अपने बैग से एक मोटी सी किताब निकालकर उसके सामने टेबल पर रख दिया फिर बोला – "मैं अभी इसे दिखाना नहीं चाहता था, मगर तुमने मुझे इतना बड़ा नकारा साबित कर दिया कि मैं खुद को रोक नहीं पाया। जानते हो ये उपन्यास मैं सबसे पहले उस बेवफा को नजर करना चाहता था, जिसकी बेवफाई ने मुझे इतनी टीसें दीं कि उन टीसों को मैं कागज पर उतारने को मजबूर हो गया, नतीजा तुम्हारे सामने है – और सुनकर तुम हैरान रह जाओगे कि बीस उपन्यासों का अग्रिम कांट्रेक्ट साइन कर चुका हूं। हर उपन्यास का एक लाख और तीस फीसदी रॉयल्टी, अब कहकर दिखाओ कि मैं नकारा हूं! अपनी मिठाई खुद चखकर खुश होने वाला हलवाई हूं।" कहकर वो बड़े ही गर्व से मुस्कराया।

आशीष हकबकाकर उसका मुंह तकने लगा। फिर उसने उपन्यास उठाकर देखा टाइटल था, 'आवारा लेखक' लेखक के नाम वाली जगह पर नीलेश तिवारी लिखा था। बैक साईड में उसकी फोटो भी छपी थी। उसे मेरठ के 'मॉर्डन पब्लिशर' ने प्रकाशित किया था। शक की कोई गुंजाइश नहीं थी। आशीष को एक अजीब सा शकून हासिल हुआ, मानो वो कामयाबी नीलेश की नहीं बल्कि उसकी खुद की थी।

बहरहाल पार्टी चलती रही, देर रात तक चलती रही। साढ़े दस बजे के करीब कुछ और मेहमान वहां आ पहुंचे थे। डिनर के बाद लड़कियां वापस लौट गईं। फिर नये सिरे से ड्रिंक और डिनर का

Sample Copy. Not For Distribution.

दौर शुरू हुआ जो कि काफी लम्बा खिंचता चला गया। रात के बारह बजे नीलेश से विदा लेकर आशीष अपने फ्लैट पर पहुंचा और सूट–बूट में ही बिस्तर पर पसर गया।

अगली सुबह वो सोकर उठा तो नौ बज चुके थे। तैयार होकर वो ऑफिस के लिए निकलने ही लगा था कि तभी उसका मोबाईल रिंग होने लगा। फोन उसके एडीटर अनिल सलूजा का था। जिसने उसे बताया कि एक बजे की फ्लाईट से उसे एक स्पेशल असाइनमेंट पर कोलकाता जाना है। जहां उसे चार या पांच दिन लग सकते थे, इसलिए उसे पूरी तैयारी के साथ वहां के लिए रवाना होना था।

आशीष ने घड़ी पर निगाह डाली तो पाया कि साढ़े ग्यारह तो हो भी चुके थे। बड़ी मुश्किल से वो इस शार्ट नोटिस पर फ्लाईट पकड़ने में कामयाब हो पाया। तीन बीस के करीब उसकी फ्लाईट कोलकाता के नेताजी सुभाष चंद्र बोस इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर लैंड हुई। जहां उसे लेने के लिए 'खबरदार' के कोलकाता ऑफिस का एडिटर खुद आया हुआ था।

आशीष उसके साथ उसकी कार में सवार हो गया। अगले दो–तीन दिन इतनी व्यस्तता में बीते कि आशीष को किसी और बात की तरफ ध्यान देने की फुर्सत ही नहीं मिली।

इतनी कहानी सुना चुकने के पश्चात आशीष ने अपने सामने बैठे न्यूज एडीटर अनिल सलूजा कि तरफ देखा, और खामोशी से नेवीकट का पैकेट निकालकर एक सिगरेट सुलगाने लगा।

"फिर क्या हुआ?" अनिल सलूजा उत्सुक स्वर में बोला।

"अगली सुबह वो अपने फ्लैट में मरा हुआ पाया गया था। इसकी खबर मुझे उसकी मौत के तीन दिन बाद, कोलकाता में ही लगी थी। बाद में जब मैंने फोन करके संबंधित थाने से उसकी मौत के बारे में जानना चाहा तो आईओ ने बताया कि जांच में पता चला था कि उसकी मौत बाथरूम में पैर फिसल जाने कि वजह से हुई थी।"

"बात कुछ समझ में नहीं आई।" – सलूजा बोला – ''जरा खुलकर बताओ, भला बाथरूम में पैर फिसलने से भी किसी की मौत होती है।''

"उसकी हुई थी, मौत कोई दरवाजे पर दस्तक देकर नहीं आती जो आदमी उससे बचने का इंतजाम कर सके। क्या पता अभी मेरे सामने कुर्सी पर बैठे–बैठे ही तुम्हारा हार्ट फेल हो जाय! या सीलिंग फैन टूटकर तुम्हारे सिर पर आ गिरे और तुम दुनिया से चलते बनो, या...।''

Sample Copy. Not For Distribution.

''अरे मैं समझ गया भाई, अब बस भी करो।'' – सलूजा तनिक हड़बड़ाहट भरे लहजे में बोला – ''बात नीलेश की मौत की हो रही थी।''

''हां सुनो, दरअसल उस रात पार्टी से लौटकर जब वो अपने फ्लैट पर पहुंचा तो वहां उसने ड्रिंक करना शुरू कर दिया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार अल्कोहल की जितनी मात्रा उसके शरीर में पाई गई थी, उस हिसाब से उसने दो लार्ज या तीन स्मॉल पैग डकारा हो सकता है। मगर क्योंकि उसने पहले कभी शराब नहीं पी थी, इसलिए जल्दी ही वो नशे में धुत्त हो गया। फिर नशे की हालत में वो किसी वक्त बाथरूम में पहुँचा, जहाँ पैर फिसलने की वजह से उसका सिर बाथरूम की दीवार से टकराकर फूट गया। सिर पर आई चोट इतनी गम्भीर थी कि वो अपनी चेतना गवां बैठा, नतीजा ये हुआ कि बेहोशी की हालत में उसके सिर से लगातार खून बहता रहा, जिसकी वजह से सुबह सात बजे के करीब उसकी मौत हो गई थी।"

"तुम्हारा मतलब है वो दीवार से सिर टकराने कि वजह से नहीं मरा था, बल्कि उसकी मौत बेहोशी के दौरान खून अधिक बह जाने की वजह से हुई थी।"

"ठीक समझे।" कहकर आशीष ने सिगरेट का एक गहरा कश लिया।

''तुम अभी–अभी बताकर हटे हो कि वो कभी शराब नहीं पीता था, फिर उस रात उसके ड्रिंक करने की जरूर कोई खास वजह रही होगी?"

"सिवाय इसके और क्या वजह हो सकती है कि उसकी जिन्दगी के दिन पूरे हो गये थे। 'आवारा लेखक' के प्रकाशन की खुशी ने उसका दिमाग हिला दिया था। वरना दूसरों को शराब ना पीने की नसीहतें देने वाला उस रोज खुद शराब को गले ना लगा बैठता। सच पूछो तो ये उसकी बदकिस्मती ही कही जायेगी कि जिस मुकाम को हासिल करने के लिए उसने दिन–रात एक कर दिया था। उसके हासिल से मिलने वाली वाह–वाही को इंज्वॉय किये बिना ही वो दुनिया से रूख्शत हो गया।"

"चलो मान ली तुम्हारी बात! अब तुम मुझे ये बताओ कि रात के बारह–एक बजे उसे शराब कहाँ से हांसिल हुई। वो कोई डेली

Sample Copy. Not For Distribution.

Get Complete Book
At Educreation Store
www.educreation.in

Sample Copy. Not For Distribution.

आखिरी शिकार

नीलेश तिवारी एक लेखक था! ऐसा लेखक जो अपने लेखन से मिलने वाली वाहवाही का लुत्फ नहीं उठा सका। उसकी पहली रचना 'आवारा लेखक' प्रकाशित क्या हुई, मानो उसकी जिंदगी को ग्रहण लग गया। अगले ही रोज वो अपने फ्लैट के बाथरूम में मरा हुआ पाया गया। क्या पुलिस, क्या मीडिया! सभी उसकी मौत को महज दुर्घटना करार देकर खामोश बैठ गये थे। तभी नेशनल डेली 'खबरदार' के नाम से आई एक चिट्ठी ने हाहाकार मचाकर रख दिया। फिर एक के बाद एक हत्याओं का जो सिलसिला शुरू हुआ वो तो जैसे रूकने का नाम ही नहीं ले रहा था। पुलिस हैरान थी, परेशान थी! कातिल को पकड़ना तो दूर रहा, पुलिस हत्यारे का मकसद तक नहीं तलाश कर पा रही थी....!

लेखक से संपर्क हेतुः
skpathaknovel@gmail.com
www.santoshpathak.in

EDUCREATION
PUBLISHING (Delhi)
www.educreation.in

Also available as an eBook
FICTION
ISBN 978-1-61813-835-4

Sample Copy. Not For Distribution.